P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-I* ISSUE-IX* December- 2016
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

ममता कालिया के कथा साहित्य में आर्थिक चेतना

ज्योति यादव
व्याख्याता,
हिन्दी विभाग,
व्यापार मण्डल कन्या स्नाकोत्तर महाविद्यालय,
हनुमानगढ़

सीता गौड़
व्याख्याता,
हिन्दी विभाग,
डा0 बी0 आर0 ए0 गर्वमेन्ट कालेज,
श्री गंगानगर

सारांश

'अर्थ' आज के युग की रीढ की हड्डी है। अर्थ के निकलते ही समाज का ढांचा चरमरा जाता है। जब से नारी में आर्थिक चेतना जाग्रत हुई इसके परिणाम स्वरूप उसने समाज में अपने अस्तित्व को पहचाना है। वह घर की चारदीवारी को लांघकर आर्थिक क्षेत्र में अपनी पहचान बनाने में प्रयत्नशील रही है। आर्थिक क्षेत्र की प्रगति का प्रभाव केवल नारी पर ही नहीं पड़ा बल्कि आत्मनिर्भर होकर उसने परिवार एवं समाज को भी गौरवान्वित किया है। वह नौकरी कर परिवार का पालन–पोषण करने में भी पुरूष का सहयोग कर रही है। ममता कालिया जी के कथा साहित्य की अधिकांश नारी पात्र अर्थ क्षेत्र में सचेत होकर अपने अस्तित्व को स्थापित करती है।

मुख्य शब्द : स्वतंत्र अस्तित्व, आत्मनिर्भर, अर्थाभाव, समानता, आर्थिक दायित्व, स्वावलम्बन, समाज

प्रस्तावना

'अर्थ' आज के युग की रीढ की हड्डी है। समाज और मनुष्य की कल्पना 'अर्थ' के अभाव में नहीं की जा सकती। अर्थ के निकलते ही समाज का ढांचा चरमरा जाएगा। वैज्ञानिक युग में मनुष्य के चतुर्मुखी विकास का केन्द्रीकरण अर्थ में निहित है। शिक्षा के परिणाम स्वरूप नारी आज पढ लिखकर नौकरी करने लगी है। परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए वह सहयोग दे रही है। पति तथा बच्चों को सुख–सुविधाएँ मिले इसके लिए वह प्रयत्नशील रही है। इसलिए पुरूष के साथ यहाँ उसका सहयोग प्रत्यक्ष, सीधा और समानता के स्तर पर है।

नारी और पुरूष के संबंधों को लेकर अब तक 'प्रेम' विवाह तथा 'काम' संबंधों को ही आधार माना जाता रहा परन्तु आधुनिक वैज्ञानिक युग में इससे भी अधिक महत्वपूर्ण संबंध आर्थिक बन गया है। धन की चमक से नारी और पुरूष के गुण–अवगुण देखे परखे जाने लगे है। नारी पुरूष की अर्धांगिनी है, इसे साबित करने का अवसर आ गया है। परन्तु पुरूष अर्धनारीश्वर है या नहीं? इस बात की चुनौती से पुरूष कोई मतलब नहीं रखता। पिता, पति या बॉस बनकर आज भी वह उसका 'मालिक' बन बैठा है। समाज के आर्थिक दायित्व में नारी हाथ बंटा रही है पर पुरूष की मानसिकता में बदलाव का कोई संकेत दिखाई नहीं पड़ता।

यह निश्चित रूप से सुखद है कि गत कुछ दशकों से अपने अस्तित्व बोध की बदौलत नारी घर की चारदीवारी में से निकलकर सामाजिक राजनीति एवं सरकारी क्षेत्रों में अपनी कई किस्म की सक्षम भूमिका निभा रही है। लगभग अस्तित्व की इसी चेतना के कारण ममता जी के कथा–साहित्य की अधिकांश नायिकाएँ एक योग्य अधिकारी, डॉक्टर, अध्यापिका, समाज सेविका एवं व्यवसायिका तथा साहित्यकार भी है। अब वह दुनिया में मजबूती से पैर रख रही है, जो कभी सिर्फ पुरूषों की हुआ करती थी। नारी के कदमों के लिए यह दुनिया, जमीन नई एवं अजनबी होते हुए भी वह जीवन के हर क्षेत्र में पुरुष के बराबर अस्तित्व छोड़े जा रही है। आर्थिक स्तर पर स्वतंत्र अस्तित्व के संघर्ष में उसकी संवेदनाएँ उतनी ही तीव्र दिखाई देती है।

'लगभग प्रेमिका' कहानी की नायिका 'सुजाता' उच्च शिक्षित है। वह अपने अस्तित्व को स्थायी आधार प्रदान के लिए अस्थायी नौकरी पकड़ लेती है। ''यह बड़ी हास्यास्पद सच्चाई थी कि कहने को मैं प्रवक्ता थी, लेकिन मुझे कुल डेढ सौ रूपये मिलते थे। पिछले तीन साल से मैं विमेन्स कॉलेज में अंशकालीन प्रवक्ता थी। हर साल कॉलेज में न जाने कितनी नियुक्तियाँ होती, पदोन्नतियाँ होती और मैं वही की वहीं रह जाती''।[1]

'बसन्त सिर्फ एक तारीख' की नायिका 'चन्दा' आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होने की लालसा में महीनों बाद घर से बाहर निकलती है। उसे अपने अस्तित्व की रक्षा का बोध नौकरी ढूंढने के लिए प्रेरित करता है। वह कहती है

–''दरअसल हम लेखन को समर्पित दम्पती थे। सारी दोपहर हम कलम घसीटते थे। शामें कॉफी हाऊस में बीतती थी। सुबह हम अखबारों के दफ्तरों में ताक–झांक करते पाए जाते थे। ये सब अपने आप में पूर्णकालिक काम थे।''[2] आत्मनिर्भर होने की लालसा उसे चापलूसी करके नौकरी प्राप्त करने की आशा संजोने के लिए प्रेरित करती है।

'मन्दिरा' कहानी की नायिका 'मन्दिरा' नौकरी मिलने पर भी किसी की चापलूसी नहीं करना चाहती है। युनिवर्सिटी के सहकर्मियों में वह अपने स्वतंत्र अस्तित्व की झलक देती है। मन्दिरा को ''इस विषय में कोई दिलचस्पी नहीं थी कि महिलाएँ उसके बारे में क्या सोचती है। किसी के सोचने से कोई बदल नहीं जाता। वह टकटकी लगाये खिड़की के बाहर देख रही थी।''[3] मन्दिरा अपने कार्यालयीन क्षेत्र में स्वयं के अस्तित्व को स्वतंत्र रूप से प्रतिष्ठित करती है। अस्तित्व की गहरी चेतना उसमें विद्यमान है।

सत्रांस भरे पारिवारिक माहौल में किसी तरह संतोष प्राप्त न कर सकने पर भविष्य की चिन्ता में स्त्री कुन्ठाग्रस्त हो जाती है। ऐसे समय में नौकरी प्राप्त करना की लालसा भी तीव्र हो जाती है। 'मनहुसाबी' कहानी की मनहुसाबी ''पिछले साल से ही मनहुसाबी एक स्कूल में पढाने लगी है। उसे औरो से डयोढा काम मिलता है और वेतन आधा। वह प्रशिक्षित नहीं है। दरअसल घर की चखचख से निजात पाने को उसने यह नौकरी ढँढ़ी थी।''[4]

'जाँच अभी जारी है' कहानी की नायिका 'अर्पणा' एक राष्ट्रीयकृत बैंक में नियुक्ति पाकर घर जाकर माँ और पिताजी से कहती है– ''जितनी घर में चारपाई है, उतनी बड़ी तो मेरी मेज है। वहाँ रोज लाखों रूपये का टर्नओवर होता है। इतनी बैंक है।''[5] अपने अस्तित्व के गौरव को वह मन ही मन महसूस करती है।

परिवार की आर्थिक डावाडोल परिस्थिति से अवगत होकर जब नारी स्वयं स्फूर्ति से कुछ काम करके पैसा कमाने का प्रयत्न करती है तब परिवार के अन्य सदस्यों की प्रेरणा की आवश्यकता होती है। नारी को प्रेरणा देना तो दूर उसे सामाजिक क्षेत्र में अर्थोपार्जन का समान अवसर नहीं दिया जाता। उसका कार्यक्षेत्र समाज न रहकर घर रहा है। वह अर्थ की दृष्टि से पुत्र, पति और पिता के अधीन रही है।

'श्यामा' कहानी की नायिका को पति से प्रेरणा मिलने की बात तो दूर उसके बाहर निकलने पर पति द्वारा प्रतिबंध लगा दिया जाता है। श्यामा प्रधानाचार्या से कहती है–''दीदी, बच्चों और मेरे प्रति उनका बर्ताव बहुत कठोर है। बात–बात में बच्चों के सामने कहते है 'आई विल किल यू'। बच्चे डरकर रोते है।..... मैनें सोचा है नौकरी करूँगी और घर की, बच्चों की जरूरतें खुद पूरी करूँगी।''[6] श्यामा को बोध हो चुका है कि कच्ची–पक्की नौकरी लगते ही उसकी व उसके बच्चों की समस्त परेशानियां खत्म हो जायेगी।

'वह मिली थी बस में' कहानी की सहनायिका सोनू की माँ तो अर्थभाव के कारण शहर के धोबी घाट में काम करने चली जाती है। नौकरी पेशा नायिका तो देर होने के कारण पति के क्रोध से डर जाती है, किन्तु अनपढ़ होते हुए भी पति की बातों का नायिका डटकर सामना करती है। वह कहती है– ''अबेर का हमने की। दवा दिलाकर सीधी आ रही हूँ। आदमी तो बहोत नरम–गरम करे तो हम तो दे देइत है एक झन्नाटा कनपट्टी पे।''[7] उसकी निडरता नायिका को जीवन के नूतन सघंर्षात्मक आयामों का बोध कराती है।

पेट की चिन्ता में मनुष्य कैसी भी हीन अवस्था में क्यों न हो, क्रियाशील बना रहता है। 'चोट्टिन' कहानी की नायिका बेकार होने के कारण बर्तन मांजने का काम करती है, पर जहाँ वह बर्तन मांजती है वहाँ उसे मालकिन के हाथ –पैर भी दबाने पड़ते है। अर्थाभाव के कारण होने वाली पीड़ाओं का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करते हुए बेटी सुखिया कहती है, ''तुम मना क्यों नहीं कर देती अम्मा। बासन भांड़े का काम तय हुआ है हम्माली का नहीं।''[8] इस प्रकार पढ़ी लिखी–नारी अपनी माँ के आर्थिक शोषण को सहन नहीं करती।

'शॉल' कहानी की नायिका 'ननकी' भी अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए एक स्कूल में चपरासी की नौकरी कर लेती है। ''उसे स्कूल में काम करते ग्यारह साल हो गये थे, लेकिन उसकी नौकरी अभी कच्ची थी। कच्ची नौकरी कैसे पक्की होती है, यह ननकी को मालूम नहीं था, बस इतना मालूम था कि कच्ची नौकरी वालों को पक्की नौकरी वालों से आधा वेतन मिला करता है।''[9]

'बेघर' उपन्यास की 'संजीवनी' की आर्थिक स्थिति वैसे भी डांवाडोल ही थी। घर की आर्थिक स्थिति को उबारने के उद्देश्य को लेकर ही बैक ऑफ बडौदा में छोटी, कच्ची सी नौकरी पकड़ लेती है। ऐसा करते हुए वह अपने मनोरंजन के लिए भी समय नही निकाल पाती है। उसे अपनी आर्थिक हानि की ही चिंता रहती है। ''अचानक कांशस होकर संजीवनी बोली, ''ओह ढाई बज गये, अगर अब नहीं पंहुची तो आधी कैजुअल लग जाएगी।''[10] इस प्रकार वह अपने आर्थिक स्तर को सुधारने का प्रयत्न करती हैं।

'लड़कियाँ' उपन्यास की 'लल्ली' अर्थ–क्षेत्र में अपना अस्तित्व स्थापित करने के लिए सचेत है। वह कहती है–''अब मैने अपने सारे इरादे भुला दिये थे। मेरे व्यक्तित्व का सर्वश्रेष्ठ अंग नौकरी को समर्पित था। मेरी समस्त संवेदना, कल्पनाशीलता और रचनात्मकता जिंगल और स्लोगन में लगी हुई थी।''[11]

अध्ययन का उद्देश्य

1. नारी में नारी की आर्थिक चेतना का विकास करना।
2. नारी समाज में व्याप्त उत्पीड़न एवं शोषण को समाप्त करना।
3. नारी समाज को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करना।
4. नारी वर्ग को और अधिक आत्मनिर्भर बनाना।
5. शिक्षित नारी जाति को अन्याय के विरूद्ध और अधिक सक्रिय करना।
6. नारी को पुरूष की सच्ची सहयोगिनी बनाना।
7. नारी वर्ग में स्वस्थ प्रतियोगिता की भावना का विकास करना।

8. नारी वर्ग को उसकी शक्ति एवं योग्यता से परिचित करवाना तथा उसकी योग्यता का विकास करना।

निष्कर्ष

ममता जी के कथा–साहित्य में अधिकांश नारियाँ आर्थिक क्षेत्र में अपने अस्तित्व की पहचान निर्माण करने के लिए संघर्षशील दिखाई देती है। परिवार की चारदीवारी को लांघकर वह विश्व के नए अर्थरूपी आकाश को बातों में भर लेना चाहती है। सामाजिक वातावरण का उस पर गहरा असर पड़ा है। समाज की विसंगतियों का सामना करते–करते वह प्रतिकूल मार्ग में भी अपने लक्ष्य की ओर जाने लगी। जीवन का प्रत्येक प्रतिष्ठित क्षेत्र, चाहे वह कितनी ही आय का क्यों न हो, काम करके चार पैसे कमाकर परिवार एवं समाज में अपने अस्तित्व को सर्वाधिक गौरव असम्भव सिद्ध होने का बोध उसे हो चुका है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ममता कालिया की कहानियाँ, खण्ड–1ः ममता कालिया, पृ. 130
2. वही, पृ. 211
3. ममता कालिया की कहानियाँ, खण्ड–1ः ममता कालिया, पृ. 292
4. वही, पृ. 344
5. ममता कालिया की कहानियाँ, खण्ड–2ः ममता कालिया, पृ. 25
6. ममता कालिया की कहानियाँ, खण्ड–2ः ममता कालिया, पृ. 257
7. ममता कालिया की कहानियाँ, खण्ड–2ः ममता कालिया, पृ. 382
8. ममता कालिया की कहानियाँ, खण्ड–2ः ममता कालिया, पृ. 99
9. ममता कालिया की कहानियाँ, खण्ड–2ः ममता कालिया, पृ. 111
10. 'बेघर', ममता कालिया, पृ. 48
11. 'तीन' लघु उपन्यासः ममता कालिया, पृ. 79